

हम्पी: एक समग्र विश्लेषण

पहला खंड: पौराणिक भूमि और ऐतिहासिक उद्भव

हम्पी, जो आज कर्नाटक के बेल्लारी जिले में तुंगभद्रा नदी के तट पर विशाल शिलाखंडों के बीच बिखरे हुए खंडहरों का एक शहर है, केवल एक ऐतिहासिक स्थल नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का एक अंश है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ समय की धाराएँ आपस में मिलती हैं, जहाँ पौराणिक कथाएँ इतिहास के साथ संवाद करती हैं और जहाँ प्रकृति की भव्यता मानव निर्मित चमत्कारों को अपनी गोद में समेटे हुए है। किसी भी यात्री के लिए हम्पी का पहला अनुभव विस्मयकारी होता है। यहाँ दूर-दूर तक फैले हुए ग्रेनाइट के विशाल, गोल-मटोल पत्थर ऐसे लगते हैं मानो किसी दैवीय शिशु ने खेलकर उन्हें यँ ही बिखेर दिया हो। इन पत्थरों के बीच से अपना मार्ग बनाती हुई पवित्र तुंगभद्रा नदी और हरे-भरे ताड़ के पेड़ों के झुरमुट इस सूखे और चट्टानी परिदृश्य को एक रहस्यमयी सुंदरता प्रदान करते हैं। यह भूमि जितनी ऐतिहासिक है, उतनी ही पौराणिक भी है, और इसके इतिहास को समझने से पहले इसकी पौराणिक जड़ों को समझना आवश्यक है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, हम्पी और इसके आसपास का क्षेत्र ही रामायण में वर्णित 'किष्किन्धा' है, जो वानर राजा सुग्रीव और बाली का राज्य था। माना जाता है कि यहीं पर भगवान राम की भेंट हनुमान जी से हुई थी और उन्होंने सीता जी की खोज के लिए वानर सेना को संगठित किया था। आज भी इस क्षेत्र के कई स्थानों के नाम रामायण की घटनाओं से जुड़े हुए हैं। पास में स्थित अंजनाद्री पहाड़ी को हनुमान जी का जन्मस्थान माना जाता है। मतंग पर्वत, जहाँ ऋषि मतंग रहते थे, और ऋष्यमूक पर्वत, जहाँ सुग्रीव ने बाली के भय से शरण ली थी, आज भी यहाँ मौजूद हैं। हम्पी के कण-कण में रामायण की कथाएँ गूँजती हैं, जो इसे हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाती हैं। इस भूमि का प्राचीन नाम 'पंपा क्षेत्र' था, जो देवी पार्वती के एक रूप पंपा देवी के नाम पर पड़ा, जिन्होंने यहीं पर भगवान शिव से विवाह करने के लिए तपस्या की थी। आज भी हम्पी का सबसे प्रमुख और जीवंत मंदिर, विरुपाक्ष मंदिर, पंपा देवी और भगवान शिव (विरुपाक्ष) को ही समर्पित है।

इस पौराणिक भूमि पर ऐतिहासिक अध्याय का आरंभ चौदहवीं शताब्दी में हुआ, जब दक्षिण भारत एक राजनीतिक उथल-पुथल के दौर से गुज़र रहा था। उत्तर से हो रहे निरंतर आक्रमणों के कारण दक्षिण के हिंदू राज्यों का अस्तित्व संकट में था। इसी दौर में, हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों ने, जो वारंगल के काकतीय राजवंश के सामंत माने जाते हैं, तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर विजयनगर साम्राज्य की नींव रखी। उन्होंने अपने गुरु संत Vidyaranya के मार्गदर्शन में इस साम्राज्य की स्थापना की, जिसका उद्देश्य

दक्षिण की हिंदू धर्म और संस्कृति की रक्षा करना था। हम्पी को इसकी राजधानी के रूप में चुना गया, जिसका एक बड़ा कारण इसकी प्राकृतिक और सामरिक स्थिति थी। यह एक ओर तुंगभद्रा नदी और दूसरी ओर विशाल चट्टानी पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जो इसे एक अभेद्य किला बनाते थे।

अगली दो शताब्दियों में, विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत की सबसे शक्तिशाली और समृद्ध शक्तियों में से एक बन गया। संगम, सलुव, तुलुव और अरविदु नामक चार राजवंशों ने इस पर शासन किया। इस साम्राज्य ने न केवल दक्षिण भारत को राजनीतिक स्थिरता प्रदान की, बल्कि कला, साहित्य, संगीत और वास्तुकला को भी अभूतपूर्व संरक्षण दिया। हम्पी, जो अब विजयनगर के नाम से जानी जाती थी, दुनिया के सबसे भव्य और धनी शहरों में से एक बन गई। यहाँ के बाज़ारों में दुनिया भर से व्यापारी आते थे और हीरे-जवाहरात, मसाले, रेशम और घोड़ों का व्यापार करते थे। शहर की भव्यता और समृद्धि का वर्णन कई विदेशी यात्रियों, जैसे कि पुर्तगाल के डोमिंगो पेस और फर्नाओ नुनिज़, ने अपने लेखों में किया है, जो आज भी उस गौरवशाली युग की एक झलक प्रस्तुत करते हैं।

दूसरा खंड: विजयनगर साम्राज्य का वैभव और स्थापत्य कला

विजयनगर साम्राज्य का वैभव अपने चरम पर तुलुव राजवंश के महानतम शासक, सम्राट कृष्णदेवराय (१५०९-१५२९) के शासनकाल में पहुँचा। उनका काल विजयनगर के लिए एक स्वर्ण युग था, जिसमें साम्राज्य ने सैन्य, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अभूतपूर्व ऊँचाइयों को छुआ। कृष्णदेवराय न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि वे कला और साहित्य के भी एक महान संरक्षक थे। उनके दरबार में 'अष्टदिग्गज' नामक आठ महान तेलुगु कवि सुशोभित थे। उन्होंने स्वयं भी 'अमुक्तमाल्यदा' नामक एक महाकाव्य की रचना की। उनके शासनकाल में हम्पी में कई भव्य मंदिरों और संरचनाओं का निर्माण हुआ, जिनमें कृष्ण मंदिर और प्रसिद्ध विठ्ठल मंदिर का विस्तार शामिल है। शहर की समृद्धि का आलम यह था कि पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पेस ने लिखा था कि यहाँ के बाज़ारों में अनाज, फल और सब्जियों के ढेर ऐसे लगे रहते थे जैसे वे घास हों, और रोम जितना बड़ा यह शहर दुनिया का सबसे संपन्न शहर था।

हम्पी की वास्तुकला द्रविड़ शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, लेकिन इसमें स्थानीय दक्कनी और इस्लामी वास्तुकला के तत्व भी दिखाई देते हैं, जो एक अनूठी और समन्वित शैली को जन्म देते हैं। शहर के खंडहरों को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है: पवित्र केंद्र और राजकीय केंद्र। पवित्र केंद्र तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित है और इसमें अधिकांश मंदिर और धार्मिक संरचनाएँ हैं। इनमें सबसे प्रमुख विरुपाक्ष मंदिर है, जो विजयनगर साम्राज्य की स्थापना से भी पहले का है और आज भी एक जीवंत पूजा स्थल है। इसका विशाल गोपुरम दूर से ही दिखाई देता है और इसके प्रांगण में एक अद्भुत वास्तुशिल्प और धार्मिक

वातावरण है। यहीं पास में विशाल गणेश प्रतिमाएँ, जैसे कि ससिवेकलु गणेश और कडलेकलु गणेश, और एक विशाल लक्ष्मी नरसिंह की अखंड मूर्ति भी स्थित है, जो साम्राज्य के कारीगरों के कौशल का प्रमाण है।

पवित्र केंद्र का सबसे बड़ा आकर्षण विठ्ठल मंदिर परिसर है। यह मंदिर भगवान विष्णु के विठ्ठल रूप को समर्पित है और विजयनगर की स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना माना जाता है। मंदिर के प्रांगण में स्थित पत्थर का रथ (शिला-रथ) हम्पी की पहचान बन गया है और भारतीय मुद्रा पर भी अंकित है। इस रथ के पहिये वास्तव में घूम सकते थे। मंदिर का मुख्य मंडप अपने रहस्यमयी 'संगीत स्तंभों' के लिए प्रसिद्ध है। इन स्तंभों पर थपथपाने से संगीत के सात स्वरों (सा-रे-ग-म) की ध्वनि निकलती है, जो आज भी वास्तुकारों और वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली है। इस मंदिर की दीवारों पर की गई बारीक नक्काशी और इसकी भव्यता किसी को भी मंत्रमुग्ध कर सकती है।

राजकीय केंद्र में शाही परिवार के निवास, प्रशासनिक भवन, सभागार और अन्य धर्मनिरपेक्ष संरचनाएँ स्थित थीं। यहाँ की वास्तुकला में इस्लामी शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसे इंडो-इस्लामिक या इंडो-सारसेनिक शैली कहा जाता है। इसका सबसे सुंदर उदाहरण 'कमल महल' (लोटस महल) है, जो अपनी कमल की पंखुड़ियों जैसी मेहराबों के लिए जाना जाता है। पास में ही 'गजशाला' (एलीफैंट स्टेबल्स) है, जो शाही हाथियों को रखने के लिए बनाई गई थी और इसकी गुंबददार छतें भी इस्लामी वास्तुकला से प्रेरित हैं। 'रानी का स्नानागार' (क्वीन्स बाथ) और विशाल 'महानवमी डिब्बा', जहाँ से राजा दशहरा जैसे त्योहारों का अवलोकन करते थे, राजकीय केंद्र के अन्य प्रमुख आकर्षण हैं। हज़ारा राम मंदिर, जो शाही परिवार का निजी मंदिर माना जाता है, की बाहरी दीवारों पर रामायण की पूरी कथा को मूर्तियों के माध्यम से उकेरा गया है, जो एक अद्भुत कलाकृति है।

तीसरा खंड: पतन की गाथा और खंडहरों का मौन

हर महान साम्राज्य की तरह, विजयनगर का भी एक दुखद अंत हुआ। साम्राज्य की बढ़ती शक्ति और समृद्धि ने उत्तर की दक्कनी सल्तनतों - बीजापुर, अहमदनगर, गोलकोंडा और बीदर - को चिंतित कर दिया। जो सल्तनतें पहले आपस में लड़ती रहती थीं, उन्होंने विजयनगर के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बना लिया। सन् १५६५ में, तालीकोटा (या राक्षसी-तंगड़ी) नामक स्थान पर विजयनगर साम्राज्य और दक्कनी सल्तनतों के इस संघ के बीच एक निर्णायक युद्ध हुआ। इस युद्ध में, विजयनगर की सेना को एक विनाशकारी हार का सामना करना पड़ा। इस हार के पीछे आंतरिक विश्वासघात को भी एक बड़ा कारण माना जाता है। युद्ध में तत्कालीन सम्राट आलिया राम राय मारे गए और विजयनगर की सेना पूरी तरह से बिखर गई।

युद्ध में हार के बाद जो हुआ, वह इतिहास के सबसे क्रूर और विनाशकारी अध्यायों में से एक है। विजयी सल्तनत की सेनाओं ने राजधानी विजयनगर (हम्पी) की ओर कूच किया और शहर में प्रवेश कर लिया। इसके बाद लगभग छह महीने तक शहर में अभूतपूर्व लूटपाट, आगजनी और नरसंहार का दौर चला। जिस शहर को बनाने में दो शताब्दियों से अधिक का समय लगा था, उसे कुछ ही महीनों में तहस-नहस कर दिया गया। मंदिरों को तोड़ा गया, मूर्तियों को खंडित किया गया, महलों को जला दिया गया और बाज़ारों को लूट लिया गया। सोने-चाँदी और हीरे-जवाहरात से भरे इस शहर को पूरी तरह से कंगाल कर दिया गया। विदेशी यात्री सेवेल ने इस विनाश का वर्णन करते हुए लिखा है, "उन्होंने एक भी ऐसी चीज़ नहीं छोड़ी जिसे तोड़ा या जलाया न जा सके... दुनिया के इतिहास में शायद ही कभी इतने समृद्ध शहर का ऐसा आकस्मिक और क्रूर विनाश हुआ हो।"

इस विनाश के बाद, विजयनगर शहर फिर कभी आबाद नहीं हो सका। शाही परिवार दक्षिण की ओर पेनुकोंडा और बाद में चंद्रगिरि में स्थानांतरित हो गया, लेकिन साम्राज्य फिर कभी अपनी पुरानी महिमा प्राप्त नहीं कर सका। हम्पी, जो कभी दुनिया का एक गौरवशाली महानगर था, एक वीरान और उजाड़ खंडहर में बदल गया। समय के साथ, प्रकृति ने इन खंडहरों को अपनी आगोश में ले लिया और यह वैभवशाली शहर सदियों तक गुमनामी के अंधेरे में खोया रहा। जो बाज़ार कभी दुनिया के सबसे कीमती सामानों से भरे रहते थे, वहाँ अब केवल सन्नाटा और हवा की सरसराहट बाकी थी। जो मंदिर कभी घंटियों और मंत्रों की ध्वनि से गूँजते थे, वे अब टूटी हुई मूर्तियों के साथ मौन खड़े थे।

आज हम्पी के इन खंडहरों में घूमते हुए, एक अजीब सा एहसास होता है। यह केवल पत्थर और टूटी हुई दीवारों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक गौरवशाली सभ्यता की मौन कहानी कहता है। यहाँ की हर शिला, हर स्तंभ अपने वैभवशाली अतीत और दर्दनाक अंत की गाथा सुनाता है। एक तरफ विरुपाक्ष मंदिर का जीवंत वातावरण है, तो दूसरी तरफ विट्ठल मंदिर का शांत और परित्यक्त सौंदर्य। यह विरोधाभास ही हम्पी की आत्मा है। यह हमें याद दिलाता है कि महिमा और समृद्धि कितनी क्षणभंगुर हो सकती है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब ब्रिटिश पुरातत्वविदों और इतिहासकारों ने इन खंडहरों को फिर से खोजा, तो दुनिया एक खोई हुई सभ्यता के इस अद्भुत खजाने से फिर से परिचित हुई। तब से, यह इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया है।

चौथा खंड: आधुनिक हम्पी: विरासत का संरक्षण और पर्यटन

आज हम्पी एक विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल और यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है, जो दुनिया भर से इतिहास प्रेमियों, तीर्थयात्रियों, पुरातत्वविदों और सामान्य पर्यटकों को आकर्षित करता है। भारतीय

पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) यहाँ के स्मारकों के संरक्षण, रखरखाव और उत्खनन का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। नए-नए उत्खननों से आज भी विजयनगर साम्राज्य के बारे में नई जानकारीयाँ सामने आ रही हैं। हम्पी का विशाल क्षेत्र, जो लगभग ४१ वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, एक खुले संग्रहालय जैसा है, जहाँ हर कोने में कोई न कोई ऐतिहासिक अवशेष देखने को मिलता है। पर्यटक यहाँ साइकिल या स्कूटर किराए पर लेकर इन खंडहरों के बीच घूमना पसंद करते हैं, जो एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है।

आधुनिक हम्पी में कई अलग-अलग दुनियाएँ एक साथ बसती हैं। एक ओर हम्पी बाज़ार और विरुपाक्ष मंदिर का क्षेत्र है, जो तीर्थयात्रियों और पारंपरिक पर्यटकों से भरा रहता है। यहाँ छोटी-छोटी दुकानें, गेस्ट हाउस और भोजनालय हैं। दूसरी ओर, तुंगभद्रा नदी के पार विरुपापुर गद्दी नामक क्षेत्र है, जिसे लोकप्रिय रूप से 'हिम्पी द्वीप' के नाम से जाना जाता था। यह क्षेत्र विदेशी बैंकपैकर्स के बीच बहुत लोकप्रिय था, जहाँ का वातावरण बहुत शांत और आरामदायक था। हालांकि हाल के वर्षों में नियमों में बदलाव आया है, फिर भी यह क्षेत्र अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। यह दोहरापन हम्पी को एक अनूठा चरित्र प्रदान करता है, जहाँ आध्यात्मिकता और आधुनिक पर्यटन एक साथ मौजूद हैं।

हर साल, कर्नाटक सरकार द्वारा 'हम्पी उत्सव' का आयोजन किया जाता है, जो विजयनगर साम्राज्य के गौरव को याद करने का एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम है। इस उत्सव के दौरान, हम्पी के खंडहर संगीत, नृत्य, नाटक और प्रकाश की रोशनी से जीवंत हो उठते हैं। देश भर के प्रसिद्ध कलाकार यहाँ अपनी कला का प्रदर्शन करने आते हैं, और यह उत्सव हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह उत्सव हम्पी की मृतप्राय विरासत में फिर से जान फूंकने का एक प्रयास है और यह दिखाता है कि यह स्थान आज भी सांस्कृतिक रूप से कितना जीवंत है।

हालांकि, पर्यटन के बढ़ते दबाव ने हम्पी के लिए कई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। इन अमूल्य स्मारकों का संरक्षण एक निरंतर और कठिन कार्य है। पर्यटकों द्वारा फैलाई जाने वाली गंदगी, स्मारकों को होने वाला नुकसान और अनियंत्रित निर्माण कार्य इस विश्व धरोहर स्थल के लिए एक बड़ा खतरा हैं। सरकार और स्थानीय प्रशासन के लिए सतत पर्यटन को बढ़ावा देना और विकास तथा संरक्षण के बीच संतुलन बनाना एक बड़ी चुनौती है। यह आवश्यक है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए इस अनमोल विरासत को संरक्षित रखने के लिए सख्त नियम बनाए जाएँ और पर्यटकों को भी अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक किया जाए। हम्पी का भविष्य इसी संतुलन पर निर्भर करता है। यह केवल पत्थरों का शहर नहीं है; यह एक सभ्यता का प्रतीक है, एक साम्राज्य की कहानी है, और भारत के गौरवशाली अतीत का एक जीवंत प्रमाण है, जिसे सहेजना हम सभी का कर्तव्य है।